20 / 10 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

ईश्वरीय मर्यादा द्वारा सर्व प्राप्तियों को
सहेजने का अनुभव

➢➢ अथॉरिटी स्वरूप होने का अनुभव...

➳ _ ➳ अमृतवेले मैं आत्मा बाबा की याद में बैठी हूं...

→ बाबा से रूहरिहान कर रही हूं...

→ बाबा आपने मुझे मा. नॉलेज फुल आत्मा बनाया है...

→ मैं पॉवरफुल आत्मा हूं...

→ मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूं...

→ बाबा से मुझे सर्व शक्तियां प्राप्त हुई हैं...

■ मैं आत्मा मास्टर ऑलमाइटी ऑथारिटी हूँ...

➳ _ ➳ प्रेक्टिकल में इन स्वरूपों का अनुभव कम होता है बाबा को बताती हूं...

→ बाबा बड़े प्यार से मीठी मीठी मुस्कान देते हैं...

→ मेरी आँखों के सामने एक दृश्य आता है...

→ एक प्लेट में दवाई रखी है...

→ दूसरी और मेरी मनपसंद खाने की चीजें हैं...

→ इनको खाने की डॉक्टर ने मनाही दी है...

→ मैं स्वादवश इनका परहेज नही कर रही हूं...

■ इसलिये रोगमुक्त नही हो रही हूं...

➢➢ रोगों से मुक्त होने का साधन है परहेज़...

➳ _ ➳ मुझ आत्मा को बाबा का इशारा समझ में आ जाता है...

→ बाबा मेरे रूहानी चिकित्सक हैं... वैधनाथ हैं...

→ मुझ आत्मा को रोज ज्ञान औषधि देते हैं...

→ ताकि मेरी आत्मा विकारों रूपी रोगों से मुक्त रहे...

→ मुझे धारणा रूपी परहेज दिये हैं...

■ धारणा पूरी ना होना अर्थात ईश्वरीय मर्यादा का उल्लंघन...

➳ _ ➳ सर्व प्राप्तियों का अनुभव ना होना अर्थात श्रीमत का उल्लंघन हो रहा है...

→ अपनी सूक्ष्म चेकिंग करती हूं...

→ अपनी कमी कमजोरियों को देखती हूं...

■ जो जो परहेज नही किये उन्हें समझ जाती हूं...

➢➢ परहेज अपना कर स्वयं को रोगमुक्त करना...

➳ _ ➳ मैं आत्मा भूल कर भी किसी व्यक्ति, वस्तु, साधन, संबंध, सम्पर्क में नहीं फंसती...

→ मैं तो हूँ ही शिवबाबा की...

→ मेरे तो एक बाप दूसरा ना कोई...

→ मैं आत्मा रचना नहीं हूं...

→ मैं देह नहीं हूं...

→ मैं रचियता हूं...

- मैं मालिक आत्मा हूं...

➳ _ ➳ मैं ट्रस्टी बन कर रहती हूं...

➳ _ ➳ अपने तन की मन की ट्रस्टी हूं...

→ मैं ग्रहस्थी नही हूं...

→ अब मैं लौकिक व अलौकिक प्रवर्ति में भी ट्रस्टी बन कर रहती हूँ...

- मेरी अधिकारी पन की स्मृति जाग्रत हो गई है...
- रॉयल और सूक्ष्म सब बोझ बाबा को दे हल्की हो गयी हूं...
- कन रस... जीभरस... अब मुझे आकर्षित नहीं करते हैं...
- मेरी स्मृति ओर समर्थी समान बन रही है...
- संगदोष से दूर हो चुकी हूं...

➳ _ ➳ कर्मेन्द्रियों के रस से मुक्त आत्मा हूं...

→ मालिकपन में स्थित हूं...

→ सदा एकरस स्थिति है...

→ यथार्थ अयथार्थ की पहचान है मुझे...

- मुझे सर्वप्राप्तियों का अनुभव होने लगा है...
- जो सोचती हूँ वो कर पाती हूँ...
- बाबा से शिकायतें रूह रिहान में बदल चुकी हैं...

- मैं आत्मा संगमयुग के सुखों के झूलों में झूल रही हूं...

▶ मेरी सर्व शक्तियां जागृत हो चुकी हैं...